7. मौर्योत्तर काल

ब्राह्मण वंश	संस्थापक
शुंग	पुण्यमित्र शुंग
कण्व	वासुदेव कण्व
आन्ध्र सातवाहन	सिमुक
वाकाटक	विंध्य शक्ति

- शुंग वंश को अंतिम शासक देवभूति था।
- कण्व वंश का अंतिम शासक सुशर्मा।
- मौर्य वंश के पतन के बाद ब्राह्मण वंश का उदय हुआ।
- शुंगों की राजधानी विदिशा थी।
- पुण्यमित्र शुंग ने इन्डो-ग्रीक/हिन्द-यूनानी शासक मेनान्डर को पराजित किया।
- भरहुत स्तूप का निर्माण पुण्यमित्र शुंग ने करवाया।
- सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान थी।
- हाल ने 'गाथासप्तशती' पुस्तक की रचना की।
- सातवाहनों ने सीसे के सिक्के चलाए।
- सातवाहनों की भाषा प्राकृत व लिपि ब्राही थी।
- ब्राह्मणों को भूमि अनुदान देने की प्रथा का प्रारम्भ सातवाहन काल में हुआ।
- सातवाहनों का समाज मातृसतात्मक था।
- अजंता और एलोरा की गुफाऐं सातवाहन काल में बनाई गई थी।

मौर्योत्तर काल में भारत में विदेशी आक्रमण

विदेशी नाम	भारतीय नाम
बैक्ट्रियन	यवन
पार्थियन	पहलव
सीथियन	शक
यू-ची	कुषाण

बैक्ट्रियन/यवन

- मेनान्डर की राजधानी शाकल थी।

ख सबसे प्रसिद्ध शासक मेनान्डर था।

- मेनांडर को मिलिन्द पन्हो में मिलिन्द कहा गया है।
- मिलिन्द पन्हो में 'मेनाडंर एवं नागसेन के बीच वार्त्तालाप का वर्णन है।
- भारत में सबसे पहले हिन्द-यूनानी ने सोने के सिक्के जारी किये।
- भारत पर सर्वप्रथम आक्रमण बैक्ट्रिया के शासक डेमिट्रियस ने किया था।
- लेखवाले सिक्के सर्वप्रथम हिन्द-यूनानीयों ने जारी किऐ थे।
- पहला यवन आक्रमण पुष्यमित्र शुंग के शासन काल में हुआ।

शक

- शक मूलत: मध्य एशिया के निवासी थे।
- सर्वाधिक प्रसिद्ध शक शासक रुद्रदामन तथा नहपान थे।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार का पता चलता है। यह संस्कृत का पहला अभिलेख है।
- शक राजा अपने को क्षत्रप कहते थे।
- विक्रम संवत (57 ई॰पू॰) शकों पर स्थानीय राजा के विजय के उपलक्ष्य में प्रारंभ किया गया था।
- अंतिम शक शासक रूद्रसिह था।

कुषाण

- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था।
- कुषाण वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर/पेशावर बनाया। जबकि दुसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क ने गद्दी पर बैठने के समय 78 ई॰ में एक नया संवत् शक् संवत् (78 ।क में) चलाया।
- बौद्ध धर्म की चौथी संगीति कनिष्क के समय में हुई।
- कनिष्क का राजकवि अश्वघोष था।
- कनिष्क का समकालीन नागार्जुन था। इसे भारत का आईस्टीन भी कहा जाता है।
- नागार्जुन ने अपनी पुस्तक माध्यमिकसूत्र में सापेक्षता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।
- कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद का विख्यात विद्वान जिसने चरक संहिता की रचना की।
- अश्वघोष की प्रसिद्ध रचनाऐ: बुद्धचरित्र, सौन्दरानंद, सुत्रालंकार।
- गांधार शैली व मथुरा शैली का विकास कनिष्क के शासनकाल में हुआ।
- बौद्धधर्म का विश्वकोष 'महाविभाषशूत्र' की रचना कुषाणकाल

में हुई।

- कुषाणकालीन स्वर्ण मुद्राओं की शुद्धता सर्वोतम थी।
- मुद्राध्यक्ष - पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
- कनिष्क के दरबार की विभूतिया/विद्वान :

(1) अश्वघोष (2) वसुमित्र
(3) पार्श्व (4) चरक
(5) नागार्जुन (6) महाचेत
(7) संघरक्ष

- सुदूर दक्षिण के जीवन पर पहले संगय साहित्य से ही स्पष्ट प्रकाश पड़ता है।
- समुद्र व्यापार में दक्षिण के महत्व पर 'पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी' नामक कृति द्वारा प्रर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- संगम तमिल कवियों का संघ/मंडल था। इन संघों का आयोजन पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में किया गया।
- इस समय के साहित्य में तीन महत्वपूर्ण राज्य चोल, चेर तथा पाण्ड्य का उल्लेख है।

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पाण्ड्य शासक	मदुरा (मदुरै)
द्वितीय	तोलकाप्पियर	पाण्ड्य शासक	कपाटपुरम
तृतीय	नक्कीरर	पाण्ड्य शासक	उत्तरी मदुरा (मदुरै)

संगय युग

राज्य	राजधानी	प्रतिक चिन्ह
चेर	वांजि/करुपूर	धनुष
चोल	प्रारंभिक उत्तरी मनलूर बाद में उरैपुर	बाघ
पाण्ड्य	मदुरैं	कार्ष (एक प्रकार की मछली)

EduBull.com